"शारदा लिपि का एक — ऐतिहासिक परिचय"

शारदा-लिपि के काल-निर्णय के परिप्रेक्ष्य में प्रायः जार्ज ब्यूलर के प्रामाणिक मान्यता को ही भारतीय लिपि के विद्वानों ने अन्तिम सत्य मानकर संतोष कर लिया। लंका-महावंश और कल्हण की राजतरंगिणी के साक्ष्य के आधार पर यह स्पष्ट हो चुका है कि मौर्य सम्राट अशोक ईसा पूर्व ढाई सौ साल के युग में कश्मीर की घाटी में माध्यमिक बौद्ध-धर्म के प्रचार में संलग्न थे। गान्धार के मार्ग से ब्राह्मी-लिपि कश्मीर की घाटी में कब की परिचित हो चुकी थी, पर मौर्य सम्राट की सक्रियता के फलस्वरूप

शारदा - लिपि को अवश्य ही राजकीय
महत्ता प्राप्त हुआ होगा। इस तथ्य
का ऐतिहासिक साक्ष्य "गिलगित -
मैनस्क्रिप्ट" के प्रकाशित छः भागों में
बहुधा मिलता है।

कुषाण - साम्राज्य का
शासन कश्मीर में शतकों तक
रहा आया है। सम्राट कनिष्क के
युग में ही विश्व बौद्धधर्म की
चौथी - संगीति का आयोजन कश्मीर
की घाटी के विविध स्थलों तथा
अंचलों पर संपन्न हुआ। सभा के
अन्त पर कुषाण - साम्राज्य के शासकों
और बौद्धधर्म के आचार्यों ने
धम्मपद, त्रिपिटक और बुद्ध के
प्रवचनों को शारदा की विकसित
लिपि में ताँबे के पट्टों पर उकेर

कर सुरक्षित स्थान पर छोड़
के रखा। राहुल सांकृत्यायन
की मान्यता है कि उसी ताम्र-पट
के उकेरने के साक्ष्य ने विकसित
कुटिली के आधार पर शारदा की
लिपि को जन्म दिया है।
चीन के तॉङ्ग शासक
ने ईसी 383 में कश्मीर के गौतम
संघदेव को सादर चीन देश बुला-
कर शारदा लिपि में लिखे ग्रन्थों
को चीनी भाषा एवं लिपि में प्रस्तुत
करने का कार्यभार सौंपा। ईसा
की चौथी शती के "विभाषा-दर्शन" के
"अभिधर्म-कोश" में आचार्य वसु-
बन्धु विन्दु होकर लिखते है :—
"काश्मीरवैभाषिकनीतिसिद्धः —
प्रायो मयायं कथितोऽभिधर्मः"

तथ्यपरक साक्ष्य के आधार
पर निष्कर्ष यह निकल आता है कि
शारदा लिपि का अस्तित्व आचार्य -
वसुबन्धु के युग से सुदूर पूर्ववर्ती
समय रहा होगा।
जापान देश के होरयुजी
"विहार के परिसर के संरक्षण में
"उष्णीष विजय धारिणी" के ग्रन्थ में
कश्मीर की शारदा वर्णमाला उप-
लब्ध हुई है और इस का कालनिर्णय
ईसा की पाँचवीं शती का ठहराया -
गया है। मास्को में आयोजित "कुषाण-
साम्राज्य" की अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के
परिसंवाद में प्रो० (डॉ०) गफूर ने -
मृण्मूर्ति (Terracotta) के तथ्यशिल्प —
(Artifact) पर अंकित शारदा लिपि के
अक्षरों का प्रदर्शन करके इस का समय

ईशा की दूसरी शती का होना
प्रामाणिक ठहराया है।

चीन देश के महान्
कौड़ भिक्षु ह्यून्त्सांग ने अपने
कश्मीर आवास के दो वर्ष जिस
जैनेन्द्र विहार के ग्रन्थागार में
बिताए उस ग्रन्थागार के पुस्तकों की
लिपि शारदा ही थी, इस का
संकेत भिक्षु ह्यून्त्सांग ने अपने यात्रा
विवरण में प्रस्तुत कई बार किया है।

कश्मीर शैवागम के महान्
आवश्यकार आचार्य क्षेमराज ने ईशा की
ग्यारहवीं शती में इस तथ्य को स्पष्ट
किया है कि शिवसूत्र जिस शंकरपला
(शंकर-उत्पल) अथवा चट्टान पर
उकेरे मिले थे, वह लिपि भी शारदा-
ही रही है।

"ईस्वी ग्यारहवीं शती की
अवधि में अलहिन्द पुस्तक के लेखक
अलबेरूनी ने अपनी पुस्तक में शारदा
लिपि की विशद प्रशंसा की है और
लिखा है कि कश्मीरी में "जनमानस
इस लिपि को शुरू से "सिद्धमातृका"
के नाम से बुलाते हैं।

शारदा लिपि ने प्रमुख के
कारण कई एक लिपियों को जन्म
दिया है, उनमें प्रमुख हैं :- तिक्री,
कोड़ी, गुरुमुखी, टाकरी, पांवची -
और भी दस-एक उपलिपियां हैं।

शारदा लिपि या उसके -
पूर्ववर्ती ब्राह्मी एवं खरोष्ठी के —
अधिकांश शिलालेख (Rock-inscription)
उत्तर मध्ययुग के इतिहासकार —
जोनराज एवं श्रीवर के कथन के

अनुसार निर्दयता से विनष्ट किए गए।
शारदा के रहे-सहे शिलालेख
पश्चिमी-पंजाब, दिल्ली, हिमाचल प्र-
देश, लद्दाख, और कश्मीर के
भिन्न-भिन्न आँचलों पर मिले हैं।

शारदा लिपि का इतिहास
दो हजार वर्ष प्राचीन है।

भूमिका लेखक
त्रिलोकीनाथ गंजू,
हब्बू - श्रीनगर,
कश्मीर.